श्री बालाजी व्रत कथा

साक्षात् श्री बालाजी की कृपा से प्राप्त अद्भुत व्रत कथा

विश्वपति

(तिम्मराजु विश्वपति रामकृष्णमूर्ति)

श्री बालाजी के चरण कमल - नारायणगिरि (तिरुमला)

श्रीरस्तु शुभमस्तु अविघ्नमस्तु

श्री बालाजी व्रत कथा

साक्षात् श्री बालाजी की कृपा से प्राप्त अद्भुत व्रत कथा

तिम्मराजु विश्वपति रामकृष्णमूर्ति

श्रीं

श्री डिज़ाइन्स

Vedic Business Consultants

www.shridesigns.net

Phone :+919949288962

हैदराबाद

2007

श्री बालाजी व्रत कथा

साक्षात् श्री बालाजी की कृपा से प्राप्त अद्भुत व्रत कथा

तिम्मराजु विश्वपति रामकृष्णमूर्ति

(C) सर्वाधिकार रचयिता के

प्रथम - संस्करण २००७

प्रतियाँ उपलब्ध :

\`Viswapathi'
T.V.R.K. Murthy. M. Tech
Chief Consutant
\`SHRI DESIGNS'
Flat No : 204, \`Vijaya Towers', Plot No : 44
Near Mothi Nagar \`X' Roads.
HYDERABAD-500 018. A.P. India
E.Mail : viswapathi@yahoo.com
tvrkmurthy@yahoo.com.
Mobile : +919949288962
website : www.shridesigns.net

Translated By : Dr. C. Kameswari
Mobile : +919391136608

DTP : VDesign
Mobile : +91995506088
E.Mail : rvk2003a@gmail.com

Printed At: VIMAL PRINTERS
Gandhinagar,
Hyderabad
Ph: +914027611174

अनुरोध

वेंकटाद्रि समस्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन

वेंकटेश समोदेवो न भूतो न भविष्यति

वेंकटाद्री के समान पवित्र स्थान इस ब्रह्माण्ड में और कहीं नहीं है। श्री वेंकटेश्वर जी (बालाजी) के समान देवता इससे पहले न कभी कोई था और न ही होगा। श्री नारायण जी हम सभी कलियुग वासियों पर कृपा करने के लिए भूलोक के पवित्र स्थल तिरुमला पर्वत पर श्रीनिवास के रूप में अवतरित हुए हैं।

श्री बालाजी की लीलाएँ अद्भुत हैं। जो उन पर विश्वास करता है उसके लिए वैभव ही वैभव है। भगवान अनन्त हैं, सभी इच्छाओं की पूर्ति करते हैं। वे युगों-युगों से उन पर विश्वास रखने वालों की रक्षा करते आए हैं और मुक्ति प्रदान करते रहे हैं।

मेरे माता-पिता स्व. ब्रह्मश्री तिम्मराजु लक्ष्मी नरसिंह राव जी,और माता श्रीमती नागरत्नाम्बा जी ने श्री बालाजी की सेवा की और कृतार्थ हुए हैं। मैंने बचपन से ही पिताजी को नित्य बालाजी का सुप्रभात पढ़ते सुना है, उसी से मैंने प्रेरणा प्राप्त की। तभी से वे मेरे सर्वस्व बन गए। वैसे तो मैंने इंजीनियरिंग की पर मेरा ध्यान हमेशा वेद-शास्त्रों में ही रहता था। हमेशा श्री बालाजी ही मेरे मन में विचरते रहते थे।

मैं एलूर तालूक (आन्ध्र प्रदेश, भारत), के पोतुनूरू ग्राम में १९५६ में अपने नाना जी के घर पैदा हुआ। मेरा विद्याभ्यास पोतुनूरू, नागार्जुन सागर, हैदराबाद और वरंगल में हुआ। १९८३ में रीज़िनल इंजीनियरिंग कॉलेज, वरंगल से एम-टेक कर मैं १९८८ तक आलविन कम्पनी में, १९९८ तक मातृश्री इंजीनियरिंग कॉलेज में नौकरी करता रहा। आजकल मैं अनेक बिज़िनेस (व्यापार) संस्थाओं के लिए ‘श्री ड़िज़ाइन’ के नाम से वेद, ज्योतिष शास्त्र के आधार पर कम्पनियों के नाम सूचित करने, लोगो (Logo) बनाने में व्यस्त रहता हूं। श्री बालाजी की दया से सभी संस्थाएँ दिन पर दिन उन्नति कर उन्नत स्तर प्राप्त हैं। यह सब उस बालाजी की कृपा के अलावा और कुछ नहीं है।

श्री बालाजी को अपने भक्तों से बहुत प्रेम है। यदि हम अपने अहंकार को, लौकिक विषयों पर मोह छोड़कर भगवान की प्रार्थना करेंगे तो वे ही हर तरह से हमारी रक्षा करेंगे। इस कलियुग में इन से बढ़कर और कोई नहीं है। इसी कारण हर दिन हज़ारों की संख्या में लोग तिरुमला के दर्शन करते हैं और अपनी सेवाएँ अर्पित करते हैं।

श्रीबालाजी की लीलाएँ अद्भुत हैं। यदि इनका ध्यान हम पूरा मन लगा कर करेंगे तो इनसे बढ़कर महिमाशाली भगवान और कोई नहीं होगा। श्री बालाजी के तत्व को समझ लेने से उससे बढ़कर आनन्द और कुछ नहीं होगा।

वर्ष २००५ में सबसे पहले इस पुस्तक की रचना तेलुगु भाषा में हुई। अब तक लगभग २५,००० प्रतियाँ निःशुल्क वितरित की गई हैं। जिन्होंने भी इस व्रत को सम्पन्न किया है उनके जीवन में अद्भुत घटनाएँ घटीं हैं। ज्यादा से ज्यादा लोग भगवान का आशीर्वाद प्राप्त कर सकें इसीलिए हिन्दी में इसका संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है।

श्री बालाजी व्रत कथा के नाम से जानी जाने वाली यह पुस्तक उनकी कृपा से ही रची गई है। इस कलियुग में मानव अनेक कष्ट सह रहा है। इनसे पार पाने के लिए इस व्रत को एक बार सम्पन्न करना ही काफी होता है। इससे सभी कष्ट दूर हो जाते हैं।

इस व्रत का पहला अध्याय पवित्र तिरुमला पहाड़ पर ही रचा गया है। साक्षात् उस भगवान की कृपा से रची गयी है। मैं एक सामान्य आदमी हूँ। इस व्रत कथा को लिखने का सौभाग्य श्री बालाजी से ही प्राप्तहुआ। इसके लिए मैं उन्हें कितना भी पूजूँ कम ही होगा... जिस भगवान का यह पूरा संसार है उन्हें मैं क्या दे सकता हूँ? जो भी दूँगा वह उस भगवान का ही होगा... उन्हीं की चीज़ उन्हीं को कैसे वापस कर सकता हूँ?

इस व्रत का पहला अध्याय उस भगवान की ही कृपा है। अन्य चार अध्याय महा मुनि विश्वामित्र, भरद्वाज, वशिष्ठ और अत्रि महर्षियों की कृपा द्वारा रचित हैं। मैं समझताहूँ कि इन महा तपस सम्पन्नों की कृपा पाना मेरे कई जन्मों का पुण्य फल है।

इन अध्यायों को लिखते समय मुझे अनेक चमत्कारी अनुभव प्राप्त हुए। जब तक मैं लिखता रहा तब तक उस देवाधिदेव के दिव्य चरणों को, उन महामुनियों के पवित्र चरणों को स्मरण करते हुए, प्रार्थना करते हुए मैंने रचना कार्य किया।

तिरुमला एक अद्भुत पवित्र स्थल है। तिरुमला में किसी भी जगह बैठकर, आँखें बंद कर शान्त मन से ध्यान करेंगे तो 'ओंकार' स्पष्ट रूप से सुनाई देता है। हमारे हृदय में भी उसकी प्रतिध्वनि होती रहती है। इतना ही नहीं वेद, उपनिषद् अष्टादश पुराणों की विशिष्टता सुनाई देती है। तिरुमला एक ऐसी जगह है जहाँ करोड़ों देवता, महामुनियों के दिव्य रूप यहाँ वहाँ भ्रमण करते दिखाई देते रहते हैं। अनेक जन्मों के पुण्य के ही कारण तिरुमला पर कदम रखने का और भगवान के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त होता है।

इस व्रत को सम्पन्न करना बहुत आसान है। कोई भी व्यक्ति बालाजी की कृपा प्राप्त कर अपनी शक्ति के अनुरूप इस व्रत को सम्पन्न कर सकता है। चाहे कितना ही बड़ा संकट क्यों न हो व्रत करने के कुछ ही क्षणों में टल जाता है। इसको सम्पन्न करने के लिए भक्ति का होना ज़रूरी है। शान्त चित्त से पूरा ध्यान भगवान के चरणों में लगाकर व्रत सम्पन्न करने से कुछ चमत्कार स्पष्ट होते दिखाई देंगे।

कलियुग वासी हम सभी के कष्टों, सीमाओं, प्राप्त साधनों को बालाजी जानते हैं। इसीलिए उन्होंने हमें उनको प्रसन्न करने का आसान मार्ग बताया है। इस व्रत को सम्पन्न करने वाले, व्रत कथा को सुनने वाले, प्रसाद स्वीकार करने वालों पर भगवान अवश्य कृपा करते हैं। और दुःख दूर हो जाते हैं।

इस व्रत कथा की रचना एक महान यज्ञ के समान सम्पन्न हुई है। इस व्रत कथा की पहली प्रति की पूजा तिरुमला पहाड़ पर स्थित नारायण गिरि में 'श्री बालाजी' के चरण कमलों में रख कर की गई। तीसरे संस्करण (तेलुगु में) के समय अपनी अमूल्य सलाह और आशीर्वाद देने वाले विद्वत्त जन ब्रह्म श्री अव्वारी वेंकटेश्वर शर्मा जी को मेरा शत-शत प्रणाम।

भक्ति की कोई सीमा नहीं होती, भेदभाव नहीं होता। बड़े-छोटे की भावना भी नहीं होती। भक्ति एक अजस्त्र धारा है। भक्ति के मूल श्री नारायण जी हैं। उस भगवान के प्रिय आप सभी भक्तों को मेरा नमस्कार।

हमारा देश भारत हमारी कर्म भूमि है। इसमें अनेक योगियों, सिद्ध पुरुषों ने जन्म लिया है। आज के युग में सामान्य जनता से दूर अनेक विद्वान, पंडित, महापुरुष, योगी, अज्ञातवास में जी रहे हैं। इस पुस्तक रचना में यदि कहीं कोई गलती हुई है। तो मुझे क्षमा करें और इसकी सूचना मुझे दें, यही मेरी प्रार्थना है।

श्री बालाजी की प्रिय कथा की रचना से बढ़कर सौभाग्य और क्या हो सकता है। ऐसा सौभाग्य देने वाले उस परब्रह्म को मेरा प्रणाम। मेरी भगवान से एक ही विनती है, वे मुझे इतनी शक्ति दें कि मैं हमेशा उनकी भक्ति में लीन रहूँ और उनके महान तत्त्व को सभी लोगों के दिल में पैदा कर सकूँ।

इस पुस्तक रचना के समय मेरी धर्म पत्नि श्रीमती वेंकट रूक्मिणी वैदेही, सुपुत्रियाँ - कु. आनन्दी, कु. आमुक्ता, सुपुत्र - चि. आदित्य श्रीनिवास ने मेरी बहुत सहायता की। हिन्दी में अनुवाद करने के लिए श्रीमती डॉ. सी. कामेश्वरी जी का, बहुत ही सुन्दर डी.टी.पी. करने के लिए 'वी-डिज़ाइन्स' हैदराबाद का, हिन्दी में इस पुस्तक को प्रकाशित करने के लिए पूरा भार स्वीकार करने वाले श्री. एल्ला प्रगडा रमण मूर्ति जी का मैं आभारी हूँ। इस यज्ञ को सम्पन्न करने में सहायक श्रीमती और श्री गोयल जी का मैं विशेष रूप से कृतार्थ हूँ। इन सभी को श्री लक्ष्मी श्रीनिवास जी की कृपा हमेशा प्राप्त हो, यही मेरी प्रार्थना है।

इस पुस्तक रचना में जिन लोगों ने प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप में मेरी सहायता की है, उनको, जिन लोगों ने इस व्रत को सम्पन्न किया है, जिन्होंने ये कहानियाँ सुनीं, जिन लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया है उन सभी को भगवान आयु, स्वास्थ्य, सौभाग्य प्रदान करें यही मेरी प्रार्थना है।

सर्वेजना सुखिनो भवन्तुः!

श्रियः कान्ताय कल्याण निधये निधयेर्धिनाम्
श्री वेंकट निवासाय श्रीनिवासाय मंगलम्।।

तिम्मराजु विश्वपति राम कृष्ण मूर्ति

हैदराबाद।

तारीखः ०५-०७-०७

व्रत विधान

कलियुग में श्री बालाजी की कृपा पाने के लिए इस व्रत को सम्पन्न करना अत्यन्त आसान है। इस व्रत को सम्पन्न करने के तुरन्त बाद सभी कष्ट दूर हो जातेहैं। साक्षात् नारायण जी की कृपा से इस व्रत को सम्पन्न करना आसान है। कोई भी व्यक्ति, कहीं भी, कभी भी इस व्रत को सम्पन्न कर सकता है। आर्थिक कठिनाइयाँ हों, या स्वास्थ्य संबंधी कोई समस्या, मन अशान्त है या अन्य कोई भी कारण इस व्रत के सम्पन्न से ही कष्ट दूर हो जाते हैं। यदि आपने अपने घर में कोई शुभ कार्य करने का निश्चय किया है तब भी इस व्रत को संपन्न कर सकते हैं। नौकरी और व्यापार में उन्नति के लिए भी व्रत सम्पन्न करने से तुरन्त फल की प्राप्ति होती है।

इस व्रत को सम्पन्न करने के दो विधान हैं।

प्रथम विधान :

इस व्रत को पहले बताए अनुसार किसी भी समय सम्पन्न कर सकते हैं। मुख्य रूप से मार्गशीर्ष, माघ, कार्तिक महीनों में पूर्णमासी, पञ्चमी, सप्तमी, एकादश तिथियों में, श्रावण, स्वाति नक्षत्र में इसे सम्पन्न करना अच्छा होता है।

सवेरे हो या शाम, इस व्रत को सम्पन्न कर सकते हैं। इस व्रत में पाँच अध्याय है। पहला अध्याय साक्षात् श्री बालाजी की कृपा से, लिखी गई है, अन्य चार अध्याय महा तपस्वी श्री विश्वामित्र, वशिष्ठ, भरद्वाज, अत्रि महामुनियों के द्वारा बताया गया है। अपने स्वगृह में हो या निवास स्थान में, भगवान का मन्दिर हो या अन्य कोई भी पवित्र स्थान, नदी तट पर भी इसे सम्पन्न कर सकते हैं।

यदि सम्भव हो सके तो अपने बन्धु-मित्रों के साथ इसे सम्पन्न करें। सबसे पहले जिस जगह पर आप इसे सम्पन्न करना चाहते हैं उसे साफ करें। उसके बाद मण्डप तैयार कर उसमें श्री बालाजी की तस्वीर रखें। श्री देवी, भू देवी के साथ बालाजी की तस्वीर को रखना श्रेष्ठ होगा। तस्वीर के साथ एक रुपए का सिक्का रखें। उसके बाद कलश स्थापना करें।

सर्वप्रथम हल्दी के बने गणेश जी की पूजा करनी चाहिए, ताकि व्रत बिना किसी विघ्न के सम्पन्न हो सके। बाद में व्रत कथा के पाँच अध्याय पढ़ें।

स्वयं भगवान कहते हैं कि जो व्यक्ति निष्ठा और भक्ति से इसे सम्पन्न करता है, वहाँ भगवान स्वयं किसी न किसी रूप में आकर प्रसाद स्वीकार करते हैं।

द्वितीय विधान :

साक्षात् भगवान ने एक और मुख्य बात यह भी बताई है कि यदि किसी कारण, कोई समस्या हो और व्रत सम्पन्न करने के लिए समय न मिले या किसी कारणवश सम्भव न हो रहा हो तो अकेले बैठ कर भी इस व्रत को सम्पन्न किया जा सकता है।

श्री बालाजी के मण्डप के सामने बैठ कर सबसे पहले गणेश जी की प्रार्थना मन ही मन करें। फिर अष्ट दिक पालकों, नवग्रह देवताओं का मन ही मन नमन करें। तुलसी दल, नारियल, उपलब्ध फल-फूल थाली में रखें। बालाजी को स्मरण कर व्रत कथा का मन ही मन पठन करें। नारियल भगवान को अर्पित करें। इसे प्रसाद के रूप में स्वीकार करने से सभी कष्ट तुरन्त दूर हो जाते हैं। हर कथा के अन्त में नारियल समर्पित करें। महाप्रसाद के रूप में गेहूँ का रवा(दलिया), चीनी डालकर हलवा जैसे बनाएँ। उसके ऊपर केला भी रखें। हर कथा के अन्त में गोविन्द... गोविन्द... गोविन्द... तीन बार कह कर प्रार्थना करें।

बालाजी को तुलसी दल अति प्रिय हैं। इसीलिए पूजा में तुलसी दलों का रखना श्रेष्ठ होगा। व्रत सम्पन्न होने के बाद तुलसी दलों को प्रसाद रूप में स्वीकार करने से रोग निवारण होने के साथ-साथ अष्ट ऐश्वर्यों की प्राप्ति होती है। व्रत की समाप्ति पर नारियल समर्पित कर फिर उन के टुकड़े बनाकर प्रसाद रूप में भगवान को समर्पित कर वहाँ उपस्थित सभी लोगों को देकर फिर उसे स्वीकार करने से पुण्य प्राप्त होता है।

इस व्रत को विधि पूर्वक कलश स्थापना के साथ विस्तार से सम्पन्न करें। अगर सम्भव न हो तो ऊपर बताए द्वितीय विधान के अनुसार भी कर सकते हैं।

एक बात हम सभी को याद रखनी चाहिए, हमारी जो भी समस्याएँ हैं वे जितना भगवान जानते हैं और कोई नहीं जान सकता है। इसीलिए उस करुणामय की प्रार्थना कर, संकल्प कर, व्रत सम्पन्न करने से मनोकामना निश्चित ही पूरी होती है। सभी कष्ट दूर होकर अष्ट ऐश्वर्यों की प्राप्ति होती है।

समस्त सन्मंगलानिभवन्तु

श्री लक्ष्मी श्रीनिवास कटाक्ष सिद्धिरस्तु

श्री गणपति-ध्यानम्

वक्र तुण्ड महाकाय कोटि सूर्य समप्रभा

निर्विघ्नं कुरूमे देव सर्व कार्येषु सर्वदा

शुक्लांबरधरम् विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।।

प्रसन्न वदनम् ध्यायेत् सर्व विघ्नोपशान्तये।।

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलम् चन्द्र बलम् तदेव।

विद्या बलं दैव बलं तदेव लक्ष्मीपते तेंघ्रियुगम् स्मरामि।।

आचमनम्

ॐ केशवाय स्वाः	ॐ श्रीधराय नमः	ॐ पुरुषोत्तमाय नमः
ॐ नारायणाय स्वाः	ॐ ऋषीकेशाय नमः	ॐ अधोक्षजाय नमः
ॐ माधवाय स्वाः	ॐ पद्म् नाभाय नमः	ॐ नारसिंहाय नमः
ॐ गोविन्दाय नमः	ॐ दामोदराय नमः	ॐ अच्युताय नमः
ॐ विष्णवे नमः	ॐ संकर्षणाय नमः	ॐ जनार्दनाय नमः
ॐ मधुसूदनाय नमः	ॐ वासुदेवाय नमः	ॐ उपेन्द्राय नमः
ॐ त्रिविक्रमाय नमः	ॐ प्रद्युम्नाय नमः	ॐ हरये नमः
ॐ वामनाय नमः	ॐ अनिरुधाय नमः	ॐ श्रीकृष्णाय नमः

भूतोच्छाटनम्

उत्तीष्टंतु, भूतपिशाचाः एते भूमि भारकाः

ऐतेशाम् अविरोधेन ब्रह्म कर्म समारभे

(अक्षत् लेकर अपने पीछे डालें, दाएँ हाथ से नाक बन्द करके प्राणायाम करें)

प्राणायाम्

ॐ भूः ॐ भुवः, ॐ सुवः, ॐ महः, ॐ जनः, ॐ तपः, ॐ गुम् सत्यम्, ॐ तत्सवितुरवरेणयम्, भर्गो देवस्य धीमाहि, धियोयोनः प्रचोदयात्, ॐ अपोज्योतिरसोमृतं ब्रह्म भूर्भूवसुवरोम्।।

ममोपात्त दुरितक्षय द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं शुभे शोभन मुहूर्ते श्री महाविष्णुराज्ञया प्रवर्थ मानस्य अद्य ब्रह्मणः द्वितीय परार्थे श्वेत वराह कल्पे वैवस्वत मनवन्तरे कलियुगे प्रथम पादे जम्बूद्वीपे भरत वर्षे भरत खण्डे, मेरोर् दक्षिण दिग्भागे, श्री शैलस्य... (स्थान निर्देश करें), (जिन नदियों के आस पास रहते हैं उन्हें बताएँ)। स्व गृह/शोभने गृहे, समस्त देवता ब्राह्मण, हरिहर सन्निधौ, अस्मिन् वर्तमान, व्यावहारिक चान्द्र मानेन, स्वस्ति श्री प्रभावादि नाम संवत्सर मध्य (वर्ष का नाम, आयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, वार क्रम से बोलें) संवत्सरे, आयने, ...ऋतौ, मासे..., शुभ तिथौ...., श्रीमान्.... (अपना नाम), गोत्रः... नाम धेयः धर्मपत्नि समेतस्य अस्माकम् सहकुटुम्बानाम् क्षेम, स्थैर्य, धैर्य, विजय, आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं, धर्मार्थ काम मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थ फल सिद्ध्यर्थं ममोपात दुरितक्षय द्वारा श्री बालाजी व्रत कथां करिष्ये, द्रव्यैः सम्भवद्भिः पदार्थः सम्भवता नियमेन यावच्छक्ति ध्याना वाहनादि षोडशोपचार पूजाम् करिष्ये (पानी हाथ से स्पर्श करें)

तदंग कलशाराधनम् करिष्ये

(जल छोड़ें। संकल्प करने के लिए जो आचमनपात्र प्रयोग किया था वह कलशाराधना के लिए प्रयोग नहीं कर सकते हैं। भगवान के दायीं ओर कलश रख कर उस में चन्दन, कुमकुम और अक्षत्, डालकर, कलश में फूल डालकर निम्नलिखित श्लोक पढ़ें)

कलशाराधना

श्लोक- कलशस्यमुखे विष्णुः कण्ठेरुद्रस्समाश्रितः
मूले तत्र स्थितां ब्रह्म मध्ये मातृ गणाश्रिताः
कुक्षौतु सागरार्स्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा
ऋगबेदो ध यजुर्वेद सामवेदो ह्यधर्वणः
अंगैश्च सहितास्सर्वे कलशाम्बु समाश्रिताः
कलशे गन्ध पुष्पाक्षतान् निक्षिप्त्य हस्तेनाच्चाढ्य
आपो वा इदगुम् सर्वम् विश्वा भूतान्यापः प्रणवाः आपः
पश्वाः आपः पश्व आपोन्नमापोमृत आप सस्म्राडापो विराडाप
स्वराडापश्छंदागुम्स्यापो ज्योतिगुम् श्यापो यजगुम्श्याप सस्त्यमाप
सस्खा देवता आपो भू र्भुवसुव राप ॐ।

(कलश में पानी भरकर उसमें तुलसी दल डालें और हाथ से ढकें)

श्लोक- गंगै च यमुनै चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेस्मिन् संन्निधिमकुरू।।

श्लोक- कावेरी तुंगभद्राय कृष्णवेणी च गौतमी
भागीरथी च विख्याता पंच गंगा प्रकीर्तिताः
कलशोदकेन देवमात्मानम् पूजाद्रव्यानि च सम्प्रोक्ष्या।
(कलश में जो पानी है उसे फूल से लेकर भगवान पर, पूजा सामग्री पर, अपने ऊपर डालें)

श्री गणपति प्रार्थना

शुक्लाम्बरधरम् विष्णुं शशिवर्णम् चतुर्भुजं
प्रसन्नवदनम् ध्यायेत सर्व विघ्नोपशान्तये।।
आदौ निर् विघ्नेन व्रत परिसमाप्यर्थम् गणपति पूजाम् करिष्ये।।

अथ गणपति पूजा

मंत्र- गणाना त्वांगणपतिगुम् हवामहे
कविं कविना मुपमस्श्रवस्तवम्।।

ज्येष्ठ राजं ब्रह्मणाम् ब्रह्मणस्पत

आनश्श्रृण्यन् नूतिभिस् सीदसाधनम्।।

श्री महागणाधिपतये नमः, ध्यायामि, ध्यानम् समर्पयामि। आवाह्यामि, रत्न सिंहासनम् समर्पयामि, पादयोः पाद्यम् समर्पयामि, हस्तयोः अर्घयम् समर्पयामि, मुखे आचमनीयम् समर्पयामि।

मंत्र- आपोहिष्टांयोभुवस्तान उर्जेद्धातन, महेरणाय चक्षसे, याव
शिवतमोरसः तस्य भाजयतेहनः उषतीरिव मातरः तस्माअरंग
गमामवो यस्यक्षयाय जिन्वध, आपोजनयाधाचनः
श्री महागणाधिपतये नमः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।
स्नानंतरम् शुद्धाचमनीयम् समर्पयामि।।
(भगवान पर, फिर अपने आप पर पानी डालें)

मंत्र- अभिवस्त्रातु वसनान्यार शभिदेनुस्सु दुघाः पूजमानः
अभिचन्द्रा भर्ता वे नो हिरण्याभ्यश्वासरधीनोदेव सोम
श्री महागणाधिपतये नमः वस्त्र युग्मम् समर्पयामि।

मंत्र- यज्ञोपवीतं परमम् पवित्रं प्रजापतेः यत्सहजम् पुरस्तात्,
आयुष्यमग्रेयम् प्रतिमुञ्च शुभ्रम् यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः
श्री महागणाधिपतयेनमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

मंत्र- गन्ध द्वाराम् दुराधर्षाम् नित्यपुष्टान् करीषिणीम्,
ईश्वरीगुम् सर्वभूतानाम् ता मिहोपह्वये श्रियम्,
श्री महागणाधिपतयेनमः दिव्य श्री चन्दनं समर्पयामि।।

मंत्र- आयने ते परायणे दुर्वा रोहन्तु पुष्पिणीः
हृदाश्च पुण्डरीकाणि समुद्रस्य गृहा इमे।।
श्री महागणाधिपतये नमः दूर्वादि नाना विध पुष्पाणि पूजयामि।

अथ श्री षोडशानाम पूजा

ॐ सुमुखाय नमः
ॐ एकदन्ताय नमः
ॐ कपिलाय नमः
ॐ गजकर्णिकाय नमः
ॐ लम्बोदराय
ॐ विकटाय नमः
ॐ विघ्नराजाय नमः
ॐ गणाधिपतये नमः
ॐ धूमकेतवे नमः
ॐ गणाध्यक्षाय नमः
ॐ फालचन्द्राय नमः
ॐ गजाननाय नमः
ॐ वक्रतुण्डाय नमः
ॐ शूर्पकर्णाय नमः
ॐ हेरम्बाय नमः
ॐ स्कन्द पूर्वजाय नमः
ॐ सर्वसिद्धि प्रदायकाय नमः
ॐ महागणधिपतये नमः

नानाविध परिमल पुष्पाणि समर्पयामि।

श्लोक- वनस्पत्युर्भवैरादिव्यै नाना गन्धैः सु सम्युतः।
आध्रेयह्सर्वदेवानम् धूपोयम प्रतिगृह्यताम्
श्री महागणाधिपतये नमः धूपमाध्रपयामि।।

श्लोक- साज्यम् त्रिवर्ति सम्युक्तं वह्निना योजितम् प्रियम्,
गृहाण मंगलम् दीपम् त्रैलोक्यतिमिरावहम्,
भक्त्या दीपम् प्रयच्छामि देवाय परमात्मने,
त्राहि माम् नर्कात् धोराधिं दिव्यज्योतिर्नमोस्तुते।
श्री महागणाधिपतये नमः, दीपम् समर्पयामि, धूपदीपानन्तरम् आचमनीयम् समर्पयामि।

नैवेद्य- छोटी सी गुड की डली रख कर उसके चारों ओर पानी डालें।
ॐ भूर्भवः सुवः तत् सवितुर्वरेणयम् भर्गो देवस्य धीमहि, धियोयोनः प्रचोदयात्।
सत्यम् त्वर्तेन परिषिंचामि (रात में-ऋतुम् त्वा सत्येन परिषिंचामि)
श्री महागणाधिपतयेनमः गूढ़ोपहारनैवेद्यम् समर्पयामि अमृत मस्तु अमृतोवत्सरणमसि।।

ॐ प्राणाय स्वाः, ॐ अपानायास्वाः, ॐ व्यानायस्वाः, ॐ उदानाय स्वाः,
ॐ समानाय स्वाः, मध्ये-मध्ये पानीयं समर्पयामि।।

अमृतापिधान मसि उत्तरापोशनम् समर्पयामि।
हस्तौ प्रक्षालयामि, शुद्धाचमनीयम् समर्पयामि।।

श्लोक- पूगिफलैः सकरपूरैः नागवल्लीदलैरयुतम्,
मुक्ताचूर्ण समायुक्त्म् ताम्बूलम् प्रतिगृह्यताम्।
ताम्बूलम समर्पयामि।

मंत्र - गणानाम् त्व गणपतिगुम् हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्
त्वम्। ज्येष्ठ राजम् ब्रह्मणाम् ब्रह्मणस्पत अनश्श्रृण्वन्नुतिभिः
सीद सादनम्। श्री महागणाधिपतये नमः सुवर्ण मंत्रपुष्पम् समर्पयामि।

श्लोक- मंत्रहीनम् क्रियाहीनम् भक्तिहीनम् गणाधिप,
यत्पूजीतम् मया देव परिपूर्णम् तदस्तुते।।

मंत्र- यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्
तेहनाकम् महिमानस्सचन्ते यत्र पूर्वेसाध्यास्सन्ति देवाः।
पुनराचमनम्।।

अनया ध्यानावाह्नादि षोडशोपचार पूजया च भगवान सर्वात्मकः।
श्री महागणधिपतिः सुप्रीतो वरदो भूत्वा उत्तरे कर्मण्य विघ्नमस्वितति भवंतो।।
भृवन्तु उत्तरे कर्मण्य विघ्नमस्तु गणाधिपति प्रसादम् शिरसा गृह्णामि।

श्लोक- सहस्त्र परमा देवी शतमूला शताम्कुरा,
सर्वगुम् हरतुमे पापम् दूर्वादुस्स्वप्न नाशनी।
गणपतिम् यदास्थानम् उद्वासयामि।।

प्राण प्रतिष्ठा

मंत्र- ॐ असुनीते पुनरस्मासु चक्षुः पुनः
प्राणमीहनोदेहि भोगम् ज्योक्वश्येम्।

सूर्यमुच्चरंत मनुमते मृडयान स्वस्ति
अमृतं वैप्राणा अमृतमापः प्राणानेव
यधास्थानमुपह्वायते।
(भगवान की मूर्ति का स्पर्श करें)
श्री बालाजी स्वामीं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि, स्थिरोभव, वरदोभव, सुप्रसन्नोभव, स्थिरासनम् कुरु।

ध्यानम्

श्लोक- शान्ताकारम् भुजगशयनम् पद्मनाभम् सुरेशम्
विश्वाकारम् गगन सदृशं मेघ वर्णं शुभांगम्
लक्ष्मी कान्तम् कमलनयम् योगिहृध्यान् गम्यम्
वन्दे विष्णुम् भवभयहरम् सर्वलोकैकनाथम्
ध्यानम् समर्पयामि (फूल या पत्र डालें)

आवाहनम्

श्लोक- आवाहयामि देवेश सिद्धगन्धर्व सेवित
यद्रस्यमीदम् पुण्यं सर्वपापहरोहरः

आसनम्

श्लोक- देव देव जगन्नाथ प्रणुत क्लेशनाशन
रत्न सिंहासनम् दिव्यं गृहाण मधुसूदन
रत्न सिंहासनम् समर्पयामि (फूल या पत्र डालें)

पाद्यम्

श्लोक- वाञ्छितम् कुरुमे देव दुष्कृतम् च विनाशय
पाद्यम गृहाण भगवान मातुरुत्संग संस्थित
श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्री बालाजी स्वामिने नमः,
पादयो, पाद्यम् समर्पयामि (जल थाली में छोड़ें)

अर्घ्यम्

श्लोक- कुरुष्वमे दयाम् देव संसारारति भयापह

दधिक्षीर फलो पेतम् गृहाणार्ध्यम् नमोस्तुते

श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्री बालाजी स्वामिने नमः

हस्तयोः अर्घ्यम् समर्पयामि (जल थाली में छोड़ें)

आचमनम्

श्लोक- नमस्सत्याय शुद्धाय नित्याय ज्ञानरूपिणे

गृहाणाचमनम् देव सर्वलोकैक नायक

श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्री बालाजी स्वामिने नमः

मुखे आचमनीयम् समर्पयामि। (जल थाली में छोड़ें)

पंचामृतस्नानम्

श्लोक- पंचामृतं मयानीतम् पयोदधि धृतं मधु

शर्करा सहितम् चैवदेवत्वम् प्रतिगृह्यताम्

श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्री वेंकटेश्वर स्वामिने नमः

पंचामृत स्नानं समर्पयामि।

(पंचामृत यानि गाय का दूध, दही, घी, शहद, शक्कर मिला कर, भगवान का अभिषेक करें)

स्नानम्

श्लोक- स्वर्णपात्रोदकं गंगा यमुनादि समन्वितम्

शुद्धोदकं गृहाणेश स्नानं कुरु यधाविधि

श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्री बालाजी स्वामिने नमः

शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि (जल थाली में छोड़ें)

वस्त्रम्

श्लोक- तपतकाञ्चन संकाशम् पीताम्बर मिदम् हरे
सुगृहाण जगन्नाथ श्रीनिवास नमोस्तुते
श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्री बालाजी स्वामिने नमः
वस्त्र युगमम् समर्पयामि (रूई को थोड़ा लम्बा कर उसमें हल्दी, कुमकुम लगाकर भगवान को समर्पित करें)

यज्ञोपवीतम्

श्लोक- यज्ञोपवीतम् परमम् पवित्रं
प्रजापतेर्यतसहजम् पुरस्तात्
आयुष्यमाग्रायम् प्रतिमुञ्चशुभ्रम्
यज्ञोपवीतम् बलमस्तु तेजः
श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्री बालाजी स्वामिने नमः
(रूई से धागा निकालकर उसमें हल्दी, कुमकुम लगाकर भगवान को समर्पित करें। ऐसे दो समर्पित करें। यज्ञोपवीतार्थम् पुष्पम् कहकर फूल भी डाल सकते हैं।)

चन्दनम्

श्लोक- चन्दनागरु कस्तुरी घनसार समन्वितम्
गन्धं गृहाण गोविन्द नानागंधांश्चधारय
श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्री बालाजी स्वामिने नमः
(चन्दन समर्पित करें) दिव्य परिमल गन्धान् समर्पयामि

अक्षत्

श्लोक- गोविन्दा परमानन्द हरिद्रा सहिताक्षतान्
विश्वेश्वर विशालाक्ष गृहाण परमेश्वर
श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्री बालाजी स्वामिने नमः
अक्षतान् समर्पयामि (अक्षत् डालें)

पुष्पम्

श्लोक- सुगंधानि सुपुष्पाणि जाजीकुन्दमुखानि च।
मालती वकुलादिनि पूजार्यम् प्रतिगृह्यताम्।
श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्री बालाजी स्वामिने नमः।
पुष्पम् समर्पयामि (फूल डालें)

अथांग पूजा

ॐ श्री वेंकटेश्वराय नमः - पादौ पूजयामि
ॐ श्री वेंकटाचलाशाय नमः - गुल्भौ पूजयामि
ॐ श्री प्रदायकाय नमः - जानुनी पूजयामि
ॐ श्री पद्मावती पतये नमः - जंघे पूजयामि
ॐ श्री ज्ञानप्रदाय नमः - ऊरुम् पूजयामि
ॐ श्री श्रीनिवासाय नमः - कटिं पूजयामि
ॐ श्री महाभागाय नमः - नाभिम् पूजयामि
ॐ श्री निर्मलाय नमः - उदरम् पूजयामि
ॐ श्री विशाल हृदयाय नमः - हृदयम् पूजयामि
ॐ श्री परिशुद्धात्मने नमः - स्तनौ पूजयामि
ॐ श्री पुरुषोत्तमाय नमः - भुजौ पूजयामि
ॐ श्री स्वर्ण हस्ताय नमः - हस्तौ पूजयामि
ॐ श्री वरप्रदाय नमः - कंठम् पूजयामि
ॐ श्री लोकनाथाय नमः - स्कन्धौ पूजयामि
ॐ श्री सर्वेश्वराय नमः - मुखम् पूजयामि
ॐ श्री रसज्ञाय नमः - नासिकाम् पूजयामि
ॐ श्री पुण्य श्रवण कीर्तनाय नमः - श्रोत्रे पूजयामि
ॐ श्री पुल्लांबुज विलोचनाय नमः - नेत्रे पूजयामि
ॐ श्री वर्चस्विने नमः - ललाटं पूजयामि
ॐ श्री रम्य विग्रहाय नमः - सर्वाण्यांगनि पूजयामि
ॐ श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्री वेंकटेश्वर परमात्मने नमः दिव्य सुन्दर विग्रहं पूज्यामि।

श्री बालाजी अष्टोत्तर शतनामावली

(हर नाम के आगे 'ॐ' और पीछे नमः कहते हुए पूजा करें)

वेंकटेशाय	चतुर्भुजाय	जगदव्यापिने
श्रीनिवासाय	चक्रधराय	जगतकर्ते
लक्ष्मीपतये	त्रिधाम्ने	जगतसाक्षिणे
अनामयाय	त्रिगुणाश्रयाय	जगतपतये
अमृतांशाय	निर्विकल्पाय	चिन्तितार्थप्रदाय
जगद्वन्द्वाय	निष्कंलकाय	जिष्णवे
गोविन्दाय	निरान्तकाय	दाशार्हाय
शाश्वताय	निरञ्जनाय	दशरूपवते
प्रभवे	निरा भासाय	देवकीनन्दनाय
शेशद्रिनिलयाय	नित्यतृप्ताय	शौरये
देवाय	निर्गुणाय	हयग्रीवाय
केशवाय	निरूपद्रवाय	जनार्दनाय
मधुसूदनाय	गदाधराय	कन्याश्रवणतारेज्याय
अमृताय	शारंगपाण्ये	पीताम्बरधराय
माधवाय	नन्दकिने	अनघाय
कृष्णाय	शंखधारकाय	वनमालिने
श्री हरये	अनेकमूर्तये	पद्मनाभाय
ज्ञानपंजराय	अव्यक्ताय	मृगयासक्तमानसाय
श्री वत्स वक्षसे	कटिहस्ताय	अश्वारूढ़ाय
सर्वेशाय	वरप्रदाय	रवड्गधारिणे
गोपालाय	अनेकात्मने	धनार्जनसमुत्सुकाय
पुरुषोतमाय	दीनबन्धवे	धनसारलसन्मध्य कस्तूरी
गोपीश्वराय	आर्तलोकाभयप्रदाय	तिलकोज्ज्वलाय
परमज्योतिषे	आकाशराज वरदाय	सच्चिदानन्दरूपाय
वैकुण्ठपतये	योगिहृत्पद्ममन्दिराय	जगन्मंगलदायकाय
अव्ययाय	दामोदराय	यज्ञरूपाय
सुधातनवे	करुणाकराय	यज्ञभोक्ते
यादवेन्द्राय	जगत्पालाय	चिन्मयाय
नित्ययौवनरुपवते	पापघ्नाय	परमेश्वराय
चतुर्वेदात्मकाय	भक्तवत्सलाय	परमार्थप्रदाय
विष्णवे	त्रिविक्रमाय	शान्ताय
अच्युताय	शिंशुमाराय	श्रीमते
पद्मिनीप्रियाय	जटामुकुटशोभिताय	दोर्दंड विक्रमाय
धरापतये	शंखमद्योल्लसनमञ्जुलाय	परात्पराय
सुरपतये	किंकिण्याढ्य करणडकाय	परब्रह्मणे
निर्मलाय	नीलमेघश्यामतनवे	श्री विभवे
देवपूजिताय	बिल्पपत्रार्चनप्रियाय	जगदीश्वराय

श्री महालक्ष्मी अष्टोत्तर शतनामावलि

(हर नाम के आगे 'ॐ' और पीछे नम: कहते हुए पूजा करें)

प्रकृत्यै
विकृत्यै
विद्यायै
सर्वभूतहितप्रदायै
श्रद्धायै
विभूत्यै
सुरभ्यै
परमात्मिकायै
वाच्यै
पद्मालयायै
पद्मायै
शुच्यै
स्वाहायै
स्वधायै
सुधायै
धन्यायै
हिरण्मयै
लक्ष्मै
नित्यपुष्टायै
विभावरत्यै
आदित्यै
दित्यै
दीप्तायै
वसुधायै
वसुधारिण्यै
कमलायै
कान्तायै
कामाक्ष्यै
क्रोधसम्भवायै
अनुग्रहप्रदायै
बुद्धयै
अनघायै
हरिवल्लभायै
अशोकायै
अमृतायै
दीप्तायै

लोकशोक विनाशिन्यै
धर्मनिलायायै
करुणायै
लोकमात्रे
पद्मप्रियायै
पद्महस्तायै
पद्माक्षयै
पद्मसुन्दरयै
पद्मोद्भवायै
पद्ममुखयै
पद्मनाभप्रियायै
रमायै
पद्ममालाधरायै
देव्यै
पद्मिन्यै
पद्मगन्धिन्यै
पुण्यगन्धायै
सुप्रसन्नायै
प्रसादाभिमुखयै
प्रभायै
चन्द्रवन्दनायै
चन्द्रायै
चन्द्रसहोदरयै
चतुर्भुजाय
चन्द्र रूपाय
इन्दिरायै
इन्दुशीतलायै
आह्लादजनन्यै
पुष्ट्यै
शिवायै
शिवकर्त्तयै
सत्यै
विमलायै
विश्वजनन्यै
तुष्टयै
दारिद्रनाशिन्यै

प्रीतिपुष्करिण्यै
शान्तायै
शुक्लमाल्याम्बरायै
श्रियै
भास्करयै
बिल्वनिलयायै
वरारोहायै
यशस्विन्यै
वसुन्धरायै
उदारांगयै
हरिण्यै
हेममालिन्यै
धन धान्यकर्त्यै
सिद्धयै
स्त्रेण्य सौम्यायै
शुभ प्रदायै
नृपवेश्मगतानन्दायै
वरलक्ष्म्यै
वसुप्रदायै
शुभायै
हिरण्य प्राकारायै
समुद्रतनयायै
जयायै
मंगलदेव्यै
विष्णुवक्षस्थलस्थितायै
विष्णुपत्नयै
प्रसन्नाक्षयै
नारायणसमाश्रितायै
दारिद्र ध्वंसिन्यै
देव्यै
सर्वोपद्रववारिण्यै
नवदुर्गायै
महाकाल्यै
ब्रह्मविष्णुशिवात्मिकायै
त्रिकालज्ञानसंपन्नायै
भुवनेश्वरयै

श्री पद्मावति अष्टोत्तर शतनामावलि

(हर नाम के आगे 'ॐ' और अन्त में 'नमः' लगाकर पूजा करें)

पद्मावत्यै
देव्यै
पद्मोदभवायै
करुणप्रदायिन्यै
सहृदयायै
तेजस्वरूपिण्यै
कमलमुखै
पद्मधरायै
श्रियै
पद्मनेत्रे
पद्मकरायै
सुगुणायै
कुमकुमप्रियायै
हेमवर्णायै
चन्द्रवंदितायै
धगधगप्रकाश शरीरधारिणयै
विष्णुप्रियायै
नित्यकल्याण्यै
कोटिसूर्य प्रकाशिन्यै
महासौन्दर्य रूपिणयै
भक्तवत्सलायै
ब्रह्माण्डवासिन्यै
सर्ववाञ्छाफलदायिन्यै
धर्मसंकल्पायै
दाक्षिण्याकटाक्षिण्यै
भक्ति प्रदायिन्यै
गुणत्रयाविवरजितायै
कलाषोडशसंयुतायै
सर्वलोकानांजनन्यै
मुक्तिदायिन्यै
दयामृतायायै
प्राज्ञायै
महाधर्मायै प्राज्ञायै
धर्मरूपिण्यै
अलंकारप्रियायै
सर्व दारिद्रिय ध्वंन्सिन्यै
श्री वेंकटेश्वर वक्षस्थल स्थितायै
लोकशोकविनाशिन्यै
वैष्णवयै
तिरुचानुरूपुरवासिन्यै
वेदवेदयाविशारदायै
विष्णुपादसेवितायै
रत्नप्रकाशकिरीट धारिण्यै
जगन्मोहिन्यै
शक्तिस्वरूपिण्यै
प्रसन्नोदयायै
इन्द्रादिदैवतयक्षकिन्नेर
किम्पुरुषपूजितायै
सर्वलोकनिवासिन्यै
भूजयायै
ऐश्वर्यप्रदायिन्यै
शान्तायै
उन्नतस्थानस्थितायै
मन्दारकामिन्यै
कमलाकरायै
वेदान्तज्ञानरूपिण्यै
सर्वसम्पतिरूपिण्यै
कोटि सूर्य समप्रभायै
पूजाफलदायिन्यै
कमलासनादि सर्व देवतायै
वैकुण्ठवासिन्यै
अभयदायिन्यै
द्राक्षाफलपायसप्रियायै
नृत्यगीतप्रियायै
क्षीरसारगरोदभवायै
आकाशराज पुत्रिकायै
सुवर्णहस्त धारिण्यै
कामरूपिण्यै
करुणाकटाक्ष धारिण्यै
अमृतासुजायै
भूलोकस्वर्गसुखदायिन्यै
अष्टदिक्पालकाधिपत्यै
मन्मधदर्प संहारिण्यै
कमलार्धभागयै
स्वल्पराध
महापराधक्षमायै
षट्कोटितीर्थवासितायै
नारदादि मुनिश्रेष्ठ पूजितायै
आदिशंकरपूजितायै
प्रीतिदायिन्यै
सौभाग्यप्रदायिन्यै
महाकीर्ति प्रदायिन्यै
कृष्णतिप्रियायै
गन्धर्वशापविमोचकायै
कृष्णपत्न्यै
त्रिलोकपूजितायै
जगन्मोहिन्यै
सुलभायै
सुशीलायै
अंजनासुतानुग्रह
प्रदायिन्यै
भक्त्यात्म निवासिन्यै
संध्यावन्दिन्यै
सर्वलोकमात्रे
अभिमतदायिन्यै
ललितावधूत्यै
समस्तशास्त्र विशारदायै
सुवर्णाभरणधारिण्यै
इहपरलोकसुखप्रदायिन्यै
करवीरनिवासिन्यै
नागलोकमणिसः आकाशसिन्धु
कमलेश्वर पूरितरधग
मनायै
श्री श्रिनिवासप्रियायै
चन्द्रमण्डलस्थितायै
अलिवेलुमंगायै
दिव्यमंगलधारिण्यै
सुकल्याणपीठस्थितायै
कामकवनपुष्प प्रियायै
कोटिमन्मथ रूपिण्यै
भानुमण्डलरूपिण्यै
पद्मपादायै
रमायू
सर्वलोकसभांतरधारिण्यै
सर्वमानसवासिन्यै
सर्वायै
विश्वरूपायै
दिव्यज्ञानायै
स्वमंगलरूपिण्यै
सर्वानुग्रहप्रदानिन्यै
ओंकारस्वरूपिण्यै
ब्रह्मज्ञानसंभूतायै
श्रीपद्मवत्यै
सदृयोवेदवत्यै
श्री महालक्ष्मयै

धूपम्

श्लोक- दशांगं गुग्गुलोपेतम् गोधृतेन समन्वितम्

धूपम् गृहाण देवेश सर्वलोक नमस्करा।

श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्री बालाजी स्वामिने नमः।

धूपमाघ्रापयामि (धूप समर्पित करें)

दीपम्

श्लोक- त्रिलोकेश महादेव सर्व ज्ञान प्रदायक।

दीपम् दास्यामि

देवेश रक्षमाम् भक्तवत्सल।

श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्री बालाजी स्वामिने नमः।

दीपम् दर्शयामि (दीप दिखाएँ)

नैवेद्यम्

श्लोक- सर्वभक्षैश्च भोज्यैश्च रसै षडभिः समन्वितं।

नैवेद्यंतु मयानीतम् गृहाण पुरुषोत्तम।।

श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्री बालाजी स्वामिने नमः।

नैवेद्यम् समर्पयामि (नैवेद्य समर्पित करें)। (यदि केले हैं तो 'कदलीफल', नारियल हो तो 'नारिकेल फलं' निवेदयामि कहें, यदि 'गुड' है तो गुडोपहार नैवेद्यम् समर्पयामि कहें)

ॐ प्राणायस्वाः, ॐ अपानायस्वाः, ॐ व्यानाय स्वाः, ॐ उदानायस्वाः, ॐसमानाय स्वाः, ॐ परब्रह्मणे स्वाः (पानी नैवेद्य पर डालते हुए) ॐ भूर्भुवः सुवः तत्सविर्तुवरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियोयोनः प्रचोदयात्, ॐ मापो ज्योतिरापोमृतं ब्रह्म भूर्भुवसुवरोम् (भगवान को हाथ से नैवेद्य दिखाएं) मध्ये मध्ये पानीयम् समर्पयामि।

(जल छोड़ें)

अमृतापिधानमसि, उत्तरापोश्नम् समर्पयामि, हस्तौ प्रक्षालयामि, पादौ प्रक्षालयामि, पुनराचमनीयम् समर्पयामि।

ताम्बूलम्

पूगिफलैः सकर्पूरैः नागवल्लीदलैःरूतम्

मुक्ताचूर्ण समायुक्तम् ताम्बूलम्, प्रतिगृह्यताम्

ताम्बूलम् समर्पयामि

नीराजनम्

श्लोक- श्रियः कान्ताय कल्याण निधये निधयेरधीनाम्

श्री वेंकटनिवासाय श्रीनिवासाय मंगलम्।।

श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्री बालाजी स्वामिने नमः

नीराजनम् दर्शयामि (नीराजनम् समर्पित कर चम्मच से पानी लेकर) नीराजननान्तरम् पुनराचमनीयम् समर्पयामि। (कहते हुए जल छोड़ें)

मन्त्रपुष्पम्

ॐ सहस्त्र शीर्षम् देवम् विश्वाक्षम् विश्वशम्भुवम्

विश्वम् नारायणम् देवमक्षरम् परमम् पदम्

विश्वतः परमान्नित्यम् विश्वम् नारायणगुम् हरिम्।

विश्वमेवेदम् पुरुषस्तद्विश्वमुपजीबति,

पतिम् विश्वस्यात्मेश्वरगुम् शाश्वतगुम् शिवमुच्यतम्

नारायणं महाज्ञेयम् विश्वात्मानम् परायणम्।

नारायण परोज्योतिः आत्मानारायणः परः

नारायण परम् ब्रह्म तत्वम् नारायणः परः

नारायण परो ध्याता ध्यानम् नारायणः परः

यच्च किञ्चित् जगत् सर्वम् दृश्यते श्रूयते पिवा।

अन्तरबहिश्चतत्सर्वम् व्याप्यानारायण स्थितः,
अनन्तमव्ययम् कविगुम् समुद्रेन्तम् विश्वशम्भुवम्
पद्मकोश प्रतीकाशगुम् हृदयम् चाप्यधोमुखम्
अधोनिषट्या वित्सत्यान्ते नाभ्यामुपरि तिष्ठति।
ज्वालामालाकुलंभाती विश्वस्यायातनम् महत।
सन्ततंगुम् सिलाभिस्तुंलंबत्या कोशसन्निभम्।
तस्यान्ते सुशिरंगुम्सूक्ष्मम् तस्मिनसर्वम् प्रतिष्ठितम्
तस्यमध्ये महानग्निंर्विश्वारचिर्विश्वतो मुखः
सोग्रभूग्विभजन्तिष्ठान्नाहार मजरः कविः
तिर्यगूर्ध्वा मधश्शायीरश्मया स्तस्य संतता
संतापयति स्वंदेह मापादतलमस्तकः
तस्यमध्ये वह्निशिखा अणीयोर्ध्वा व्यवस्थितः
नीलतो यद मध्यस्ता विद्युल्लेखेव भास्वरा,
नीवार शूकवत्तनवी पीताभा स्तण्यूपमा,
तस्याश्शिखया मध्ये परमात्मा व्यवस्थितः
सब्रह्म सशिवः, सहरिः, सेन्द्रः सोक्षरः परमास्वराट
बुतगुम् सत्यंपरम् ब्रह्म पुरुषम् कृष्ण पिंगलम्
ऊर्धरेतं विरूपाक्षम् विश्व रूपाय वै नमो नमः
ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नो विष्णु प्रचोदयात्
राजाधिराजाय प्रसन्न साहिने। नमोवयंवैश्रवणाय कुरमहे
समेकामान्कामकामाय मह्यम् कामेश्वरौ वै श्रवणोदधातु
कुबेराय वै श्रवणाय महाराजाय नमः।
ॐ तद् ब्रह्म, ॐ तद् वायु, ॐ तदात्मा,
ॐ तत्सत्यम्, ॐ तत्सर्वम्, ॐ तत्पुरोम् नमः
अन्तः चरति भूतेषु गुहायम् विश्वमूर्तिषु,
त्वम् यज्ञ स्त्वम् वषट्कारस्त्वगुम् मिन्द्रस्त्वम् रुद्रस्त्वम्

विष्णुस्त्वम् ब्रह्मस्त्वम् प्रजापतिः

त्वम् तदाप आपोज्योति रसोमृतम् ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्।

गदा पुनश्शङ्खरथाज्ञ कल्पक ध्वजारविन्दांकुश वज्रलाञ्चित

हे श्रीनिवास त्वच्चरणाम्बुज द्वयम् मदीय मूर्धान् मलज

ॐ निरंजनाय विद्महे निराभासाय धीमहि

तन्नौ श्रीनिवासः प्रचोदयात्

श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्री बालाजी स्वामिने नमः

सुवर्ण दिव्य मंत्रपुष्पम् समर्पयामि।

प्रदक्षिण नमस्कारः

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानिच

तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे

श्लोक- पापो हम पापकर्माहम् पापात्मा पापसम्भवः

त्राहि माम् कृपमया देव शरणागतवत्सल।

श्लोक- अन्यधा शरणम् नास्ति त्वमेव शरणम् मम

तस्मातकारुण्य भावेन रक्ष रक्ष जनार्दन।

श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्री बालाजी स्वामिने नमः

आत्मप्रदक्षिण नमस्कारान् समर्पयामि।

(उपर्युक्त मंत्र पढ़ते हुए भगवान को स्मरण करते हुए तीन बार प्रदक्षिणा करें, साष्टांग प्रणाम कर फिर विविधोपचार पूजा करें।)

विविधोपचार पूजा

छत्रम् धारयामि, चामरम् वीचयामि, नृत्यम् दर्शयामि, गीतम् श्रावयामि, वाद्यम् घोषयामि, आन्दोलिकान् आरोहयामि, अश्वानारोहयामि, गजानारोहयामि, समस्त राजोपचार, शक्त्युपचार, मन्त्रोपचार, देवोपचार, सर्वोपचार पूजाम् समर्पयामि।

क्षमार्पणाम्

श्लोक- मंत्रहीनम् क्रियाहीनम् भक्तिहीनम् जनार्दन
यत्तपूजीतम् मयादेव परिपूर्णम् तदस्तुते
(नमस्कार करें)

अनयाध्यान वाहनादि षोडशोपचार पूजया च भगवान सर्वात्मकः। श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्री बालाजी स्वरूपो भगवान सुप्रीत सुप्रसन्न वरदोभवतु। श्री बालाजी देव प्रसादं शिरसा गृहणामि।

चरणामृत ग्रहण करनाः

श्लोक- अकाल मृत्यु हरणं सर्वव्याधि निवारणं
सर्व पापक्षयकरं देव पादोदकम् पावनं शुभम्
(कहते हुए भगवान के चरणामृत को ग्रहण करें)

नैवेद्यम् : ॐ भूर्भुवः सुवः ॐ तत्सवितुरवरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियोयोनः प्रचोदयात् सत्यम् त्वर्तेन परिषिञ्चामि, अमृतमस्तु अमृतोपस्तरणमसि

ॐ प्राणाय स्वाः ...ॐ अपानाय स्वाः... ॐ व्यानाय स्वाः...

ॐ उदानाय स्वाः ...ॐ समानाय स्वाः.... ॐ ब्रह्मणेस्वाः...

श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्री बालाजी स्वामिने नमः। महा नैवेद्यम् समर्पयामि।

अमृतापिधानमसि उत्तरा पोशनम् समर्पयामि, हस्तौ प्रक्षालयामि, पादौ प्रक्षालयामि, शुद्ध आचमनम् समर्पयामि।

ताम्बूलम् समर्पयामि, सुवर्ण मन्त्रपुष्पम् समर्पयामि, प्रदक्षिण नमस्कारन् समर्पयामि, अध्यान वाहनादिषोडशोपचार पूजया भगवान सर्वात्मकः। श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्री बालाजी स्वामि सुप्रीतसु सुप्रसन्नो वरदो भवतुः। श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्री बालाजी स्वामि प्रसादम् शिरसा गृहणामि।

उद्वासनं (पुनः पूजा)- यज्ञेनयज्ञंयजन्त देवाः तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्, तेहनाकम् महिमानस्सचंते यत्रपूर्वे साध्या सन्ति देवाः।

श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्री बालाजी स्वामि यथा स्थानं उद्वास्यामि।

प्रथम अध्याय

श्री भगवान उवाचः

कलियुग में एक दिन एक शुभ मुहूर्त में तिरुमला पहाड़ पर जिसे भूलोक का वैकुण्ठ कहा जाता है, 'विश्वपति' नामक एक भक्त पर विष्णु की कृपा हुई। श्री विष्णु के अवतार श्री बालाजी (वेंकटेश्वर) जो यहाँ श्रीनिवास के रूप में पूजे जाते हैं, ने उनको 'श्री बालाजी' व्रत कथा नाम से प्रसिद्ध इस ग्रन्थ की रचना करने की आज्ञा दी। और कहा- 'हे! मेरे प्रिय भक्त! विश्वपति, मेरे प्रिय होने के कारण इस व्रत को विस्तार रूप से मैं तुम्हें बताता हूँ, सुनो। यह व्रत मुझे अति प्रिय है। आसान होने के कारण इसे सभी लोग सम्पन्न कर सकते हैं।

कलियुग में मानव अपने पाप कर्मों का फल भोगता है, अनेक कष्ट सहते हुए जीवन निर्वाह करता है। कुछ भक्त मुझे अपने कष्ट बताकर उन्हें दूर करने को कहते हैं। बहुत से पैसे खर्च कर तिरुमला यात्रा करते हैं और मुझे देखने आते हैं।

मेरे भक्तों से मुझे प्रेम है। वे मुझ पर अपना पूरा भार डाल देते हैं। मैं उन्हें धर्म के मार्ग पर चलाता हूँ और उन्हें सहारा देता हूँ।

अभी मैं जो यह व्रत कथा तुम्हें बताने जा रहा हूँ वह 'श्री बालाजी व्रत कथा' के नाम से प्रसिद्ध होगा। यह मेरा अति प्रिय व्रत है। जो व्यक्ति इसे भक्ति और निष्ठा से करेगा वह तुरन्त पार पाएगा। कोई भी व्यक्ति कभी भी इस व्रत को सम्पन्न कर सकता है। मुख्य रूप से मार्गशीर्ष, माघ, कार्तिक महीनों में, पूर्णमासी, पंचमी, सप्तमी, एकादशी तिथियों में या श्रवण, स्वाति नक्षत्रों में इसे करना श्रेष्ठ होता है।

इस घोर कलियुग में मेरे भक्त जो कष्ट सह रहे हैं उन्हें मैं जानता हूँ। तुम्हें जब भी कोई कष्ट हो, कोई समस्या हो, स्वास्थ्य ठीक न हो, नौकरी, व्यापार में समस्याएँ हों, मन अशान्त हो तो व्रत सम्पन्न करना चाहिए। इससे सारे कष्ट दूर हो जाते हैं। घर में शुभ कार्य होने पर, इस व्रत को सम्पन्न करने से बिना किसी समस्या के कार्य पूर्ण हो जाता है। इस व्रत को सम्पन्न करते ही सभी सुख प्राप्त होते हैं और अष्ट ऐश्वर्यों की प्राप्ति होती है।

सवेरे या शाम इस व्रत को सम्पन्न कर सकते हैं। इस व्रत में पाँच अध्याय है। इनका पठन भक्ति के साथ करना चाहिए। अपने घर में या निवास स्थान पर, मन्दिर में या किसी भी पवित्र स्थान में, नदी तट पर सम्पन्न कर सकते हैं।

यदि सम्भव हो तो अपने बन्धु मित्रों के साथ इसे सम्पन्न करने से ज्यादा श्रेष्ठ होता है। जो इसे सम्पन्न करते हैं या जो इसे सुनते हैं, व्रत सम्पूर्ण होने के बाद प्रसाद को भक्ति से स्वीकार करेंगे तो अष्ट ऐश्वर्यों की प्राप्ति होगी। इससे पहले भी मेरे भक्तों ने, कई मुनियों ने इस व्रत को सम्पन्न किया और मेरा आशीर्वाद प्राप्त किया। भूलोक में रहने वाले सभी को यह व्रत आनन्द प्रदान करेगा और शुभ फल भी प्राप्त होगा। शान्तचित्त से मुझे याद करते हुए इस व्रत का पालन करो।

सर्वप्रथम जहाँ व्रत करना चाहते हो, उस स्थल को साफ करो। मंडप की व्यवस्था कर मेरी तस्वीर जिसमें मेरी प्रिय सखियाँ श्री देवी, भू देवी हैं, उस तस्वीर को इस मंडप पर स्थापित करो। मंडप को दीवार से सटा कर भी रख सकते हो। अन्य किसी इच्छुक देवता की तस्वीर भी रख सकते हो। नवग्रहों और अष्ट दिक् पालकों को या तो मन ही मन नमस्कार करो या उनका आह्वान भी कर सकते हो।

सबसे पहले हल्दी से बने गणेश की पूजा करनी चाहिए। उसके बाद इस व्रत के पाँचों अध्यायों का निष्ठा के साथ पठन करना चाहिए। यही प्रथम अध्याय है।

अन्य चार अध्याय मेरे अत्यन्त प्रिय पात्र विश्वामित्र, वशिष्ठ, भरद्वाज, अत्रि मुनीश्वरों के प्रवचन रूप में है। पाँच अध्यायों को पढ़ने के बाद मेरे प्रिय श्लोक भी पढ़ सकते हो। हर अध्याय के अन्त में गोविन्द, गोविन्द, गोविन्द तीन बार स्मरण करना चाहिए।

आम लोगों के कष्टों को मैं जानता हूँ। इसीलिए मेरी एक बात सुनो। यदि किसी कारण इस व्रत को विस्तार रूप से सम्पन्न करने में कोई समस्या आ रही है तो मेरे तस्वीर को सामने रख कर पहले गणेश जी की फिर नवग्रह देवताओं और अष्ट दिक् पालकों को स्मरण कर, पाँच कहानियाँ पढ़ कर अपने मन में जो इच्छा है, उसे मुझे बताओ, मैं उसे प्रसाद के रूप में प्रदान करूँगा। इस प्रकार करने से भी कार्य की सिद्धि होती है। तुम्हारे कष्ट दूर हो जाएँगे और शुभ फल प्राप्त होगा।

जो व्यक्ति इस व्रत को भक्ति से सम्पन्न करेगा, मैं उसके घर किसी न किसी रूप में आकर प्रसाद स्वीकार करूँगा। मेरी कृपा आप सभी को हमेशा प्राप्त होगी।

श्री बालाजी ने तिम्मराजु विश्वपति रामकृष्णमूर्ति 'विश्वपति' को इस व्रत कथा को विस्तार से बताया। कलियुग वासी हम सभी इस व्रत को सम्पन्न कर श्री बालाजी की कृपा के पात्र बन सकते हैं। इस व्रत को सम्पन्न कर हम अपने सभी कष्ट दूर कर सकते हैं और उचित फल की प्राप्ति कर सकते हैं।

गोविन्द.... गोविन्द.... गोविन्द....

प्रथमोध्यायः समाप्तं

श्रियः कान्ताय कल्याण निधये निधयेर्धिनाम्

श्री वेंकट निवासाय श्री निवासाय मंगलम्

द्वितीय अध्याय

श्री विश्वामित्र उवाचः

महातपः सम्पन्न साक्षात् श्री विश्वामित्र ने हम पर कृपा प्रदान की, और प्रवचन करते हुए कहा- 'हे कलियुग वासियों! श्रीनिवास के प्रिय भक्तों! 'श्री बालाजी व्रत कथा' जिसे आप सम्पन्न कर रहे हो वह बहुत ही पवित्र है, महिमा से पूर्ण है। यह व्रत कलियुग में श्री नारायण जी की करुणा और दया प्राप्त करने का अत्यन्त सरल साधन है।प्राचीन काल में श्री बालाजी के प्रिय भक्तों ने इसे सम्पन्न कर अपनी कामनाओं को पूर्ण किया। इस व्रत कथा के बारे में हमें बताकर श्री बालाजी ने हमारे प्रति जो दया दिखाई है उसके लिए हम उन्हें प्रणाम करते हैं। प्राचीन काल में मगध राज्य में विष्णुचित्त नामक एक भक्त रहता था। उसकी नौ कन्याएँ थीं। विद्वान होने पर भी वह अत्यन्त गरीब था। विष्णुचित्त की पत्नि तारामति हमेशा नारायण जी की प्रार्थना करती रहती थी।

विवाहादि शुभ कार्य सम्पन्न कर जो भी पैसे दक्षिणा के रूप में मिलते थे उससे वे मुश्किल से अपना जीवन निर्वाह कर रहे थे। कन्याएँ यौवनावस्था में पार्दापण कर चुकी थीं। तारामति हमेशा इसी चिन्ता में रहती थी कि इन कन्याओं का विवाह किस प्रकार सम्पन्न होगें। वह बालाजी की प्रार्थना करते हुए सदा अपना समय गुजारती थी।

वह तो बालाजी की भक्त थी और बालाजी अपने भक्तों से अत्याधिक प्रेम करते हैं। उस दिन माघ पूर्णिमा थी। सवेरे एक वृद्ध ब्राह्मण ने विष्णुचित्त के दरवाज़े पर दस्तक दी। और कहा- 'हे स्वामी। मैं बंग देशका वासी हूँ। एक यज्ञ के सिलसिले में दूसरे देश को जा रहा हूँ, रास्ते में यहाँ आया हूँ।' मुझ पर दया करो और अपने घर में एक दिन के लिए रहने दो, कल सवेरे ही मैं यहाँ से चला जाऊँगा।' उन की बातें सुनकर विष्णुचित ने कहा- 'नाथ! इससे बढ़कर खुशी और क्या होगी। अतिथि साक्षात् श्री नारायण जी के समान होते हैं। ऐसे हमारे पुराणों में कहा गया है। आप बिना किसी संकोच के हमारे घर में रह सकते हैं।' ऐसा कह कर उसने उस वृद्ध ब्राह्मण को घर के अन्दर बुलाया और उनका सत्कार किया।

दोपहर में भोजन के बाद उस वृद्ध ने तारामति से पूछा - 'माता क्या बात है? तुम कुछ चिन्तित सी लगती हो? बिना किसी संकोच के बात बताओ।' तारामति ने कहा- 'स्वामी आप तो महातपस्वी हैं। आपके मुख का तेज उस वैकुण्ठ वासी के समान है। आप से क्या छुपाना। मेरी चिन्ता मेरी कन्याओं का विवाह है। उस पर वृद्ध ने कहा- 'माता! तुम्हारा दुःख मैं जानता हूँ। तुम्हारे सभी कष्ट दूर हों और तुम्हारी कन्याओं की शादी हों इसके लिए मैं एक अद्भुत व्रत बताता हूँ, सुनो। इस व्रत को सम्पन्न करने से तुम्हारे सभी कष्ट दूर हो जाएँगे। श्री बालाजी के व्रतों में से यह सबसे सरल है।' कहते हुए उन्होनें उस दम्पत्ति को पूरा व्रत विधान बताया।

व्रत विधान सुनकर विष्णुचित्त ने कहा- 'स्वामी, यह तो अत्यन्त संतोष की बात है, इससे बढ़कर सौभाग्य और क्या होगा? कहते है न- 'शुभस्य शीघ्रं'। आज माघ पूर्णिमा है, बहुत ही शुभ दिन है। आपके कथनानुसार हम आज ही इस व्रत को सम्पन्न करेंगे।' विष्णुचित्त ने पत्नि तारामाति, और सभी कन्याओं के साथ मिलकर उस दिन शाम में ही अपने बन्धु-मित्रों के साथ भक्ति और निष्ठा से बालाजी व्रत को सम्पन्न किया। वहाँ उपस्थित सभी लोगों ने व्रत पूरा होने के बाद चरणामृत, प्रसाद ग्रहण किया और अपने-अपने घर प्रस्थान किया। तब विष्णुचित्त और तारामति ने ब्राह्मण के चरणों को नमस्कार किया और आशीर्वाद प्राप्त किया। ब्राह्मणोत्तम ने भी चरणामृत, प्रसाद ग्रहण किया और कहा- 'आपकी मनोकामना पूरी हो, श्री लक्ष्मी, श्री बालाजी की कृपा प्राप्त हो।'

अंधेरा हो चला था और निद्रा समय आसन्न था। विष्णुचित्त ने उस ब्राह्मण को एक फटी चादर देते हुए आँखों में आँसू लिए कहा- 'स्वामी! मैं अत्यन्त दरिद्र हूँ, इससे अच्छी चादर मेरे पास नहीं है 'मुझे क्षमा करें आज की रात इसी पर विश्राम करें।'

ब्राह्मण मुस्कुराते हुए बोले- 'कोई बात नहीं, मैं बाहर बरामदे में सो जाता हूँ।' कुछ समय बाद ही सभी निद्रा लोक में विचरण करने लगे।

आधी रात का समय था, बिजली की गड़गड़ाहट के साथ बारिश शुरू हुई। चारों ओर अंधेरा था.... कहीं कुछ नहीं दिखाई दे रहा था। विष्णुचित्त इस चिन्ता में थे कि वृद्ध ब्राह्मण बाहर कैसे सो रहे होंगे। उस समय कुछ सूझ भी नहीं रहा था। किसी तरह उन्होंने रात गुजारी... सवेरा हुआ... बारिश भी अब थम चुकी थी। पति-पत्नि यही सोच रहे थे कि बाहर ब्राह्मण की क्या दशा हुई होगी, कितना कष्ट सहा होगा उन्होंने। यही सोचते हुए वे बाहर आए, उन्हें एक अद्भुत दृश्य दिखाई दिया। ...वहाँ विप्रोत्तम नहीं थे। फटी हुई चादर की जगह रेशम का पिताम्बर रखा हुआ था। उस पिताम्बर पर 'श्री बालाजी की मूर्ति'– दिखाई दी। वे सब कुछ समझ गए। उनकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। उनके घर आए वृद्ध ब्राह्मण और कोई नहीं साक्षात् श्री नारायण जी ही थे। ...हे बालाजी! क्या भाग्य है हमारा ...पर हम उनको पहचान नहीं पाए। ...हमने उनको फटी हुई चादर दी यह सोचते हुए उन्होंने श्री बालाजी की मूर्ति को हाथ में लेकर आँखों से लगाया और घर के अन्दर आए... पूरा घर सोने से भरा हुआ था। जहाँ देखो वहाँ धन राशि। हे भगवान! श्री बालाजी की व्रत कथा की महिमा से ही यह सब सम्भव हो सका। ऐसा कहते हुए वे भगवान की स्तुति करने लगे।

आपने देखा! साक्षात् श्री बालाजी ही उस भक्त के घर आए थे। व्रत विधान बताया और चरणामृत, प्रसाद भी ग्रहण किया। श्री बालाजी बहुत ही करुणामय है। जो भी इस व्रत को भक्ति और निष्ठा से करेगा उसके घर स्वयं भगवान किसी न किसी रूप में आएँगे। आप सभी इस व्रत को सम्पन्न कर भगवान की कृपा प्राप्त कर सकते हैं।

श्री महर्षि विश्वामित्र जी ने यह द्वितीय कथा इस तरह बताई

- 'श्री लक्ष्मी श्रीनिवास कटाक्षं सिद्धिरस्तु।'

गोविन्द... गोविन्द... गोविन्द...

द्वितीयोध्यायः समाप्तं

श्रियः कान्ताय कल्याण निधये निधयेर्धिनाम्

श्री वेंकट निवासाय श्रीनिवासाय मंगलम्।।

तृतीय अध्याय

श्री वशिष्ठ उवाचः

यह अध्याय महातपोनिष्ठ वरिष्ठ श्री वशिष्ठ मुनि ने श्री नारायण जी की कृपा से हमें विस्तार रूप से बताया है। 'हे कलियुग वासियों! श्री बालाजी के प्रिय भक्तों! वैकुण्ठ में निवास करने वाले श्री नारायण जी आज के तिरुमला में स्थित श्री बालाजी ही हैं। कलियुग वासियों के कष्टों को दूर करने के लिए भगवान आपके बहुत समीप तिरुमला पहाड़ पर अवतरित हुए हैं। श्री बालाजी को खुश करने के लिए यह व्रत उत्तम है और सरल भी। इस व्रत को जो भक्ति और निष्ठा से सम्पन्न करता है, उसे सभी सुख प्राप्त हो जाते हैं।

प्राचीन समय में अवन्ती देश में भाग्यनगर नामक एक नगर था। नाम के ही अनुरूप वहाँ अनेक धनवान (व्यापारी) रहते थे। पर वे अपनी संपत्ति को देख घमंड करते थे और आम लोगों को हीन दृष्टि से देखते थे। धन-दौलत उनकी स्वार्जित है सोच कर घमंड करते थे। भगवान की नित्य पूजा-पाठ तो उन्होंने पहले ही छोड़ दी थी। कम से कम विशेष दिनों में भी वे न मन्दिर जाते, न पूजा करते, न ही दीप जलाते। एक दिन इस संसार के सृष्टिकर्ता नारायण के मन में आया कि इन सभी को सीख देना चाहिए।

एक दिन सभी धनवान अपनी-अपनी पत्नियों के साथ प्रीति भोज में व्यस्त थे। उस नगर की पूर्व दिशा में ही श्री लक्ष्मी नारायण जी का मन्दिर था जहाँ-दीप जलाने वाला कोई नहीं था। उस दिन विशेष एकादशी थी, जिसे एक पर्व दिन भी माना जाता है। पर उस नगर के एक भी धनवान के मन में मन्दिर में पूजा करने का विचार नहीं आया। शाम होते-होते आकाश में घने बादल छा गए और मूसलाधार बारिश होने लगी। व्यापारियों के घर पानी से भर गए। चारों ओर अंधकार ही अंधकार था। सवेरे होने तक पूरा नगर पानी में डूब गया। व्यापारियों के घर टूट-फूट गए। उनका सारा ऐश्वर्य समाप्त हो गया।

ऐसा उपद्रव क्यों मचा... यह प्रलय कैसे हो गया। किसी को कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। इतने में उन्हें एक विचित्र दृश्य दिखाई दिया। नगर के बाहर जो झोपड़ियाँ थीं वे तो वैसी की वैसी ही थीं। उनको आश्चर्य हुआ... इतनी बारिश में भी ये कैसे सही सलामत रहीं?... वे ऐसा मन ही मन सोच रहे थे कि इतने में बिजली कडकी और आकाशवाणी हुई।

ए मूर्खों! तुम्हारी संपत्ति तुम्हारी अपनी है, स्वार्जित है सोचते रहते थे न इसीलिए ऐसा हुआ है... इस झोपड़ी में रहने वाला देव मेरा प्रिय भक्त है। आम आदमी होने पर भी देव नित्य तुम्हारे नगर में स्थित श्री लक्ष्मी नारायण मन्दिर में दीप जलाता रहता था। इतना ही नहीं हर एकादशी के दिन यथा सम्भव वह श्री बालाजी व्रत कथा भी सम्पन्न करता था, इसीलिए इन झोपड़ियों में रहने वाले सभी लोग सुरक्षित रहे। आप सभी यदि व्रत सम्पन्न करेंगे तो अपने-अपने ऐश्वर्य को पुनः प्राप्त कर सकते हैं। आकाशवाणी सुनते ही तुरन्त वे सभी लोग उस मन्दिर में गए और जैसे, सम्भव हो सका, वैसे सभी लोगों ने एक-दूसरे के सहयोग से श्री बालाजी की व्रत कथा सम्पन्न की। ऐसा करते ही सभी को उनके घर पूर्व रूप में ही प्राप्त हो गए। तब से वे सभी श्री बालाजी के भक्त बन गए और हर एकादशी को श्री बालाजी का व्रत सम्पन्न करते और सुख-शान्ति प्राप्त कर रहने लगे। अन्त में उन्होनें मुक्ति भी प्राप्त की।' वशिष्ठ जी ने इस प्रकार इस कथा को सुनाया।

गोविन्द... गोविन्द... गोविन्द....

तृतीयोध्यायः समाप्तं

श्रियः कान्ताय कल्याण निधयेनिधयेर्धिनां

श्री वेंकट निवासाय श्रीनिवासाय मंगलं।।

चतुर्थ अध्याय

श्री भरद्वाज उवाचः

श्री नारायण जी को 'श्री बालाजी व्रत कथा' अत्यन्त प्रिय है। चतुर्थ अध्याय के रूप में हमारे सामने श्री भरद्वाज मुनि द्वारा बतायी गयी कहानी इस प्रकार है- 'हे कलियुग वासियों, श्री नारायण के प्रिय भक्तों! आप जिस व्रत को सम्पन्न कर रहे हैं वह अद्भुत है। आपकी मनोकामनाओं को पूर्ण करने का साधन है। श्री बालाजी को प्रसन्न करने का यह अत्यन्त सरल उपाय है। आप सभी पर कृपा करने के लिए ही बैकुण्ठ वासी भगवान श्रीनिवास के रूप में तिरुमला पहाड़ पर अवतरित हुए हैं। अनेक जन्मों के पुण्य फल से ही तिरुमला पहाड़ पर पैर रखने का सौभाग्य प्राप्त होता है। और भगवान के दर्शन भी सम्भव होते हैं। इसी तरह इस 'व्रत कथा' को सम्पन्न करने का संकल्प भी पूर्वजन्म के पुण्य फल से ही सम्भव होता है। जो व्यक्ति इस व्रत को सम्पन्न कर रहे हैं, या जो इस कथा को सुन रहे हैं, या जो भगवान के प्रसाद को ग्रहण करते हैं उन्हें भगवान की कृपा प्राप्त होती है और वे सौभाग्य भी पाते हैं।

प्राचीन काल में 'नगरी' नामक एक ग्राम में धनगुप्त नाम का एक व्यापारी रहता था। वह बहुत ही लालची था। ऐश्वर्य प्राप्त करने पर भी उसका लालचीपन कम नहीं हुआ। यह समस्त ऐश्वर्य उसका ही कमाया हुआ है सोचकर वह बहुत घमंड करता था। अहंकार मनुष्य का नाश करती है।

धनगुप्त की पत्नि कान्तिमती अत्यन्त भक्ति भावना रखती थी और निष्ठा से भगवान की पूजा करती थी। उनकी तीन कन्याएँ थीं। तीसरी कन्या 'कुमारी' में भक्ति भावना ज्यादा थी। वह हमेशा बालाजी का नाम ही जपती रहती थी।

पिताजी को बिना बताए वह जब-तब श्री बालाजी के मन्दिर में जाती थी और भगवान के दर्शन करती थी। घर आकर पिताजी को छोड़ अन्य सभी के साथ प्रसाद स्वीकार करती थी। पति के ऐसे व्यवहार से कान्तिमती थोड़ी चिन्तित होती।

एक दिन ‘कुमारी’ की सहेली के घर पर ‘श्री बालाजी’ का व्रत सम्पन्न हो रहा था, यह जानकर वह वहाँ गई।व्रत पूरा होने तक दोपहर हो चुका था। थोड़ा सा प्रसाद उसने ग्रहण किया और थोड़ा वह अपने घर वालों के लिए एक कागज़ की पुड़िया में ले कर चली। बीच रास्ते में उसे प्यास लगने लगी। धूप भी बहुत तेज थी। उसने सोचा थोड़ी देर कहीं रुक कर, प्यास बुझाकर फिर चलूँ तो ठीक रहेगा। तभी उसे याद आया कि उसके पिता की दुकान अगली गली में ही तो है, वहाँ जाकर उसने पिताजी को बिना बताए पिताजी से पानी माँग कर पिया और इस डर से कि पिताजी गुस्सा करेंगे उसने जल्दी-जल्दी पानी पिया और इसी घबराहट में प्रसाद की पुड़िया वहीं दुकान में भूलकर चली गई।

बाज़ार में हडकंप मच गया। लोग हाहाकार मचाते हुए इधर-उधर भागने लगे। आगजनी के कारण उस गली की सभी दुकानें जल कर राख होने लगीं। वैसे ही दोपहर का समय था ...उसके ऊपर गर्म हवाएँ चल रही थीं... धनगुप्त का शरीर डर से काँपने लगा.... ‘कुछ ही समय में उसकी दुकान भी जल कर राख हो जाएगी...’ इस विचार से उस के हाथ-पैर काँपने लगे। सभी लोग अपनी-अपनी दुकानों में से बाहर आकर इधर-उधर भागने लगे। पर धनगुप्त वहीं खड़ा रह गया। ...दुकान छोड़कर जाने का मन नहीं कर रहा था... यदि वह दुकान में रहेगा तो जलकर राख हो जाएगा... सोचते हुए उसने घबराहट में उसके हाथ लगी पुड़िया को उठा लिया और बिना सोचे-विचारे जो चीज़ हाथ में आई उसे मुँह में डाल लिया। उसे कुछ मीठा-मीठा सा पदार्थ लगा और मन भी शान्त लगने लगा।

तभी एक अद्भुत घटना घटी... आग धनगुप्त के दुकान तक आकर रुक गई। ...आग की लपटें वहाँ नहीं आ पाईं। ...यह कैसी विचित्र बात है... यह कैसी माया है। ...धनगुप्त के मुँह से एक भी बात नहीं निकल पाई। ...उधर आगजनी की खबर सुनकर पत्नि कान्तिमती, अपनी कन्याओं के साथ, बालाजी का स्मरण करती हुई दौड़ती हुई वहाँ आई। ...आग उनके दुकान तक आकर कैसे रुक गई यह देख कर उसे आश्चर्य हुआ। तभी कुमारी को दुकान में भूली हुई पुड़िया की याद आई... धनगुप्त को समझने में देर नहीं लगी कि उसने जो चीज़ मुँह में डाला था वह और कुछ नहीं भगवान का प्रसाद ही है। और उसकी महिमा से ही वे इस दुर्घटना से चूक गए।

धनगुप्त ने श्री बालाजी से क्षमा माँगी, गाल बजाए। शाम में ही नगरवासियों को बुलाकर 'श्री बालाजी की व्रत कथा' सम्पन्न की। तब से वह भगवान की सेवा में लीन हो गया और अन्त में मोक्ष भी प्राप्त की। आपने देखा न कि केवल प्रसाद ग्रहण करने से ही वह कितनी बड़ी दुर्घटना से चूक गया। बालाजी की महिमा अद्भुत है। आप सभी भी यथा सम्भव व्रत को सम्पन्न कर भगवान की कृपा प्राप्त कर सकते हैं।' भरद्वाज जी ने इस प्रकार यह चतुर्थ कथा सुनायी।

गोविन्द... गोविन्द... गोविन्द...

चतुर्थोअध्यायः समाप्तं

श्रियः कान्ताय कल्याण निधये निधयेर्धिनाम्

श्री वेंकट निवासाय श्रीनिवासाय मंगलम्।।

पंचम् अध्यायः

श्री अत्रि उवाचः

तिरुमला-तिरुपति भूलोक का वैकुंठ धाम है। पुराणों में बताया गया है कि तिरुमला के समान पवित्र स्थल और श्री बालाजी जैसे देवता न तो पहले कभी हुए हैं और न कभी होंगे। श्रीनिवास के रूप में अवतरित श्री नारायण अपने भक्तों से बहुत प्रेम करते हैं। जो उन पर अपना पूरा भार डाल कर उन्हें नित्य स्मरण करते हैं, जो सदाचार से पूर्ण जीवन बिताते हैं वे उनकी रक्षा करते हैं। ऐसे श्री बालाजी को प्रसन्न करने का सबसे सरल उपाय है- 'श्री बालाजी की व्रत कथा।'

इस अद्भुत व्रत कथा के बारे में महा तपः सम्पन्न श्री अत्रि महर्षि ने कृपा करते हुए कहा है- 'हे! बालाजी के प्रिय भक्तों! कलियुग में आपके सौभाग्य के बारे में क्या कहना। कृतयुग, त्रेतायुग और द्वापर युग में अत्यन्त कठोर तप-जप करने पर भी प्रसन्न न होने वाले श्री नारायण, इस युग में केवल नामस्मरण से ही आप लोगों पर कृपा कर रहे हैं। विश्वास के साथ उन्हें बुलाने पर वे तुरन्त कृपा प्रदान करते हैं। ऐसे करुणामय है श्री बालाजी। पवित्र तिरुमला पर तुम्हारा रखा हर कदम अनेक जन्मों के पुण्य फल के समान है।

प्राचीन काल में 'कौमार' देश में 'मित्र' नामक एक धोबी रहता था। वह अपने काम-के साथ-साथ धार्मिक कार्य करता हुआ जीवन निर्वाह कर रहा था। उसकी अपंगता ही उसकी चिन्ता थी। इसी कारण धोए हुए कपड़ों की पोटली बनाकर, घर-घर घूमकर उन्हें लोगों तक पहुँचाना उसे धीरे-धीरे मुश्किल लगने लगा। उसके ऊपर उसका परिवार भी बड़ा था। बिना मेहनत किए उसे भर पेट खाने को भी नहीं मिलता था। हमेशा वह श्री बालाजी की पूजा करता रहता था। कभी न कभी भगवान उस पर कृपा करेंगे, इसी विश्वास से वह अपना जीवन गुज़ार रहा था। भक्तों पर कृपा करने वाले बालाजी सब कुछ देखते रहते हैं। जो व्यक्ति अपने कर्मों से निवृत्त हो जाते हैं उनके पास आकर, बालाजी किसी न किसी रूप में उनकी रक्षा करते हैं।

एक दिन शाम के समय हमेशा की तरह मित्र कपड़े धोकर कपड़ों की पोटली लादे धीरे-धीरे चलता हुआ आ रहा था। बीच रास्ते में उसे एक वृद्ध ब्राह्मण दिखाई दिए। गौरव की भावना से, बड़े होने के कारण मित्र ने अपने कंधे पर लदी हुई पोटली को नीचे उतारकर वृद्ध ब्राह्मण को नमस्कार किया। तब उस विप्रोत्तम ने कहा- 'तुम अपने इस पैर के कारण कितना कष्ट सह रहे हो। तुम्हारा दुःख देखा नहीं जाता। तब मित्र ने कहा-हे नाथ! आप बड़े हैं, बुजुर्ग हैं। भरापूरा परिवार होने के कारण मुझे इस काम से मुक्ति नहीं मिल रही है। किसी तरह मेरी यह अपंगता दूर हो, ऐसा कोई उपाय बताइए।

तब उस ब्राह्मण ने कहा- 'सुनो भई! मैं ज़रूर बताऊँगा। ध्यान से सुनो। मैं एक ऐसे व्रत के बारे में बताता हूँ जिसे सम्पन्न करने से तुम्हारी अपंगता दूर हो जाएगी। और तुम्हें अष्ट ऐश्वर्यों की प्राप्ति होगी। व्रत सम्पन्न करते ही तुम्हें हज़ार अशरफियाँ मिलेंगी... पर एक शर्त है... उसमें से आधे तुम मुझे दोगे। ...कल मैं फिर इसी समय यहाँ मिलूँगा।' तब मित्र ने कहा- 'स्वामी! इससे बढ़कर सौभाग्य और क्या होगा। आज ही इस व्रत के बारे में बताइए, मैं उसे सम्पन्न करूँगा।' मित्र के उत्साह को देख वृद्ध ने श्री बालाजी व्रत कथा के बारे में बताया।

मित्र दुगुने उत्साह के साथ घर आया, पूरी कहानी पत्नी को बताई और अड़ोस-पड़ोस के साथ मिलकर श्री बालीजी व्रत को सम्पन्न किया। चरणामृत, प्रसाद ग्रहण किया, घर आए सभी लोगों को भी दिया। ...तभी घर के बाहर कुछ कोलाहल सुनाई दिया। ...मित्र का बेटा बाहर से दौड़ता हुआ आया और बोला - 'पिताजी! पिताजी! राज-रक्षक आपके लिए आए हैं। राजा ने आपके लिए भेंट भी भेजी है।' इतने में रक्षक भी वहाँ आ गए। उन्होंने बताया कि उसकी नियुक्ति राज दरबार में धोबी के रूप में हो गई है। और राजा ने हज़ार अशरफियाँ पुरस्कार स्वरूप भेजी है। ऐसा कहकर उन्होंने मित्र के हाथ में हज़ार अशरफियों की पोटली रख दी। एक हफ्ते के अंदर-अंदर उसे आकर नौकरी में भर्ती होने को भी कहा। मित्र के आनन्द की सीमा नहीं थी। एक हफ्ता क्यों, कल ही क्यों नहीं सोच कर उसने अपनी पोटली-वोटली बाँधी और दूसरे

दिन सवेरे ही वह जाने को तैयार हो गया। इस जल्दबाजी में वह उस वृद्ध की बातें भूल गया। बीच रास्ते में उसे उसकी बात याद आई, पर ठीक है... अगले महीने मिल लेता हूँ सोच कर वह राजदरबार में अपने काम पर लग गया। दिन ....महीने बीतने लगे। ब्राह्मण के वेश में आए भगवान को गुस्सा आ गया। भगवान ने सोचा मनुष्य की प्रवृत्ति ऐसी ही होती है। उसे मुझे अपनी महिमा बतानी होगी।

दूसरे ही दिन राणिवास से आभूषण चोरी हो गए ...चोरी का इल्ज़ाम मित्र पर लगा।

मित्र को कारावास की सज़ा हुई। ...राज रक्षकों ने उसे तरह-तरह की यातनाएँ दीं। ...ऐसा क्यों हुआ ...उस पर यह इल्ज़ाम क्यों लगा, सोचते हुए मित्र को रात में, सपने में भगवान दिखाई दिए। उन्होंने बताया कि वृद्ध ब्राह्मण के रूप में वे ही आए थे, क्योंकि वह अपनी बात से मुकर गया इसलिए यह सब हुआ है...' तब मित्र ने कहा- 'हे नाथ! मैं पापी हूँ... मैंने बहुत बड़ा पाप किया है.... कृपया मुझ पर दया कीजिए... अब से मैं हर महीने आपका व्रत सम्पन्न करूँगा। मेरी आय का आधा भाग जीवन भर आपको समर्पित करूँगा।' गाल बजाकर उसने भगवान की हर तरह से प्रार्थना की। भक्तों की पुकार सुनने वाले भगवान ने खुशी-खुशी मित्र पर कृपा कर दी। भगवान की कृपा से रानी जी के आभूषण दूसरे ही दिन मिल गए। राजा ने यह भी जान लिया कि मित्र ने चोरी नहीं की थी। मित्र को कारावास से रिहा कर दिया गया। तब से मित्र भगवान को दिए वचन अनुसार हर महिने श्री बालाजी का व्रत सम्पन्न करने लगा, और अपनी आय का आधा भाग भगवान को अर्पित करता रहा। सुख पूर्ण जीवन बिताते हुए उसने अन्त में मोक्ष भी प्राप्त किया।'

(श्री अत्रि जी ने ऐसा कहकर पाँचवें अध्याय को समाप्त किया।)

ऐसा ही श्री अत्रि जी ने
इस प्रकार पंचम और
आखरी कथा सुनाया।
गोविन्द... गोविन्द... गोविन्द...

पञ्चमोअध्यायः समाप्तं

श्रियः कान्ताय कल्याण निधये निधयेर्धिनाम्
श्री वेंकट निवासाय श्रीनिवासाय मंगलम्।।
अथ श्री बालाजी व्रत कथा समाप्तम्